DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
अभिज्ञानशांकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)
Part -4
LIVE
05-08-2024 05:00 PM

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)

अनसूया - सखि, आओ, चलें। (दोनों घूमती हैं।)

प्रियंवदा - (देखकर) सूर्योदय होते ही यह शकुन्तला चोटी से स्नान करके, नीवारों को हाथों में लिए हुए स्वस्तिवाचन पढ़ने वाली तपस्विनियों से अभिनन्दन की जाती हुई बैठी है। इसके समीप चलते हैं। (तदनन्तर जैसा कहा गया था, उस रूप में बैठी हुई शकुन्तला का प्रवेश)

तपस्विनियों में से एक - (शकुन्तला के प्रति) पुत्री, पति से बहुत अधिक आदर सूचक महादेवी पद को प्राप्त करो।

दूसरी - पुत्री, वीर पुत्र को उत्पन्न करने वाली बनो।

तीसरी - पुत्री, पति की बहुत अधिक आदरणीय और प्रिय बनो। (इस प्रकार आशीर्वाद देकर गौतमी को छोड़कर सब निकल गयी)

सखियाँ - सखि, तुम्हारा स्नान सुख देने वाला हो।

शकुन्तला - मेरी सखियों का स्वागत है। इधर बैठो।

दोनों - (मंगल पात्रों को लेकर) हला, तैयार हो जाओ। हम तुम्हारा मंगलकारी प्रसाधन करती हैं।

शकुन्तला - मुझको इसको भी बहुत समझना चाहिए। अब सखियों द्वारा प्रसाधन कराना मेरे लिए दुर्लभ हो जाएगा। (रोती है।)

दोनों - सखि, इस मंगल के समय में रोना उचित नहीं है। (आँसुओं को पोंछकर अलंकृत करने का नाट्य करती है।)

प्रियंवदा - आभूषणों के योग्य यह सौन्दर्य आश्रम में सुलभ प्रसाधनों द्वारा बिगाड़ा जा रहा है। (आभूषणों को हाथ में लिए हुए दो ऋषिकुमारों का प्रवेश)

दो ऋषिकुमार - ये अलंकार हैं। इन आदरणीया को अलंकृत करो। (सब देखकर आश्चर्यचकित हो गयीं)

गौतमी - पुत्र नारद, ये कहाँ से आये?

पहला - तात काश्यप के प्रभाव से।

गौतमी क्या ये ऋषि के मानसिक संकल्प के फल है? -

व्याख्या- तीन तपस्विनियों ने शकुन्तला को आशीर्वाद दिया। उनके आशीर्वाद से स्पष्ट है कि विवाह होने पर नारी के लिए पति द्वारा आदर और प्रेम प्राप्त करना, श्रेष्ठ गुणों से युक्त सन्तान प्राप्त करना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। शकुन्तला अपनी दोनों सखियों से बहुत प्रेम करती है। दोनों सखियाँ उसका श्रृंगार करती हैं। पति के घर पहुँचकर सखियों से उसका वियोग हो जाएगा।

यह विचार करके शकुन्तला की आँखों में आँसू आ जाते हैं। विदा के समय कन्या की आँखों में आँसू आना स्वभाविक है तथापि कवि जो यह कह रहा है कि मंगल समय में रोना उचित नहीं है इससे यह अभिव्यंजित होता है कि भविष्य में अमंगल होने की आशंका है। यह कथन भविष्य में होने वाले वियोग की सूचना देता है। ऋषिकुमार आभूषणों को लेकर प्रवेश करते हैं जिसको देखकर सभी आश्चर्यचकित हो जाते हैं

शब्दार्थ - **शिखामज्जिता** = सिर धोकर स्नान की हुई, प्रतीष्ट गृहीत, **वीरप्रसविनी** = वीर पुत्र को जन्म देने वाली, वि**प्रकार्यते** = बिगाड़ा जा रहा है, **उपयान** = भेंट, **मङ्गकाले** = मंगल समय में।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – शब्दाय्यन्ते = शब्दाय+णिच्+लट्, वीरप्रसविनी = वीर+प्र+सू+इनि, आभरण = आ+भृ+ल्युट्।

मूलपाठ –

द्वितीयः - न खलु। श्रूयताम्। तत्रभवता वयमाज्ञप्ताः शकुन्तलाहेतोर्वनस्पतिभ्यः कुसुमान्याहरतेति। तत इदानीम्-

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलै रापर्वभागोत्थितै –
र्दत्तान्याभरणानि नः किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः।।5।।

अन्वयः न केनचित् तरुणा इन्दुपाण्डु माङ्गल्यं क्षौमम् आविष्कृतम्। केनचित् चरणोपरागगसुभगः लाक्षारसः निष्ठ्यूतः। अन्येभ्यः किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः वनदेवताकरतलैः आभरणानि दत्तानि।

अनुवाद-

द्वितीय- नहीं, सुनिए। पूजनीय ने हमें आज्ञा दी थी कि शकुन्तला के लिए वृक्षों से फूल चुनकर लाओ। तब-

हमको किसी वृक्ष ने चन्द्रमा के तुल्य श्वेत मांगलिक रेशमी वस्त्र दिया। किसी ने पैरों को रंगने के योग्य लाक्षारस प्रकट किया। अन्य वृक्षों ने कलाई तक उठे हुए, सुन्दर किसलयों की प्रतिस्पर्धा करने वाले, वनदेवता के करतलों से आभूषण दिए।।5।।

व्याख्या - आश्रम में दुर्लभ अलंकारों को देखकर सबको आश्चर्य होता है कि आभूषण कहाँ से प्राप्त हुए। ये आभूषण काश्यप के प्रभाव से प्राप्त हुए थे। कण्व का तपोबल इतना अधिक था कि वे अपने मन के संकल्प से ही प्रत्येक वस्तु को प्राप्त कर लेते थे इसीलिए उन्होंने शिष्यों को आदेश दिया कि वनस्पतियों से कुसुम ले आओ।

जहाँ शकुन्तला वनस्पतियों के प्रति अधिक स्नेहशील थी, वहाँ वृक्ष भी उससे अत्यधिक स्नेह करते थे। उसकी विदाई के समय उन्होंने सभी प्रकार की सामग्री उसको भेंट की।

शब्दार्थ - क्षौमम् = रेशमी वस्त्र, इन्दुपाण्डु चन्द्रमा के समान श्वेत, आविष्कृतम् = प्रकट किया, निष्ठ्यूत: = निकाला, लाक्षारस: = महावर।

व्याकरणात्मक टिप्पणी - माङ्गल्यम् = माङ्गल+यत्, चरणोपरागसुभग: = चरणयो: उपरागे सुभग: (तत्पुरुष समास), आपर्वभागम् = पर्वभागं यावत् आपर्वभागम् (अव्ययीभाव समास), आपर्वभागोत्थितै: = आपर्वभागम् उत्थितै: (सुप्सुपा समास)।

प्रस्तुत श्लोक में वाचकलुप्ता उपमा अलंकार है। यहाँ शार्दूलविक्रीडित छन्द है जिसका लक्षण इस प्रकार है- 'सूर्याश्वैर्मसजस्ताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्' अर्थात् जिस छन्द में मगण, सगण, जगण, दो तगण और एक गुरु वर्ण हो, बारहवें और सातवें वर्ण पर यति हो वहाँ शार्दूलविक्रीडित छन्द होता है।

मूलपाठ –

प्रियंवदा - (शकुन्तलां विलोक्य) हला, अनयाऽभ्युपपत्त्या सूचिता ते भर्तुर्गेहे ऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः। (हला, इमाए अब्भुववत्तीए सूइआ दे भत्तुणो गेहे अणुहोदव्वा राअलच्छि ।) (शकुन्तला व्रीडां रूपयति ।)

प्रथमः गौतम, एह्येहि। अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय वनस्पतिसेवां निवेदयावः।

द्वितीयः - तथा। (इति निष्क्रान्तौ)

सख्यौ - अये, अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः। चित्रकर्मपरिचयेनाङ्गेषु ते आभरणविनियोगं कुर्वः। (अए, अणुवजुत्तभूसणो अअं जणो। चित्तकम्मपरिअएण अंगेसु द आहरणविणिओअं करेम्ह।)

शकुन्तला जाने वां नैपुणम्। (जाणे वो णेउणं।)

(उभे नाट्येनालंकुरुतः)

अनुवाद –

प्रियंवदा - (शकुन्तला को देखकर) सखी, इस अनुग्रह से सूचित होता है कि तुम पति के घर में राजलक्ष्मी का अनुभव करोगी। (शकुन्तला लज्जा का अभिनय करती है)

पहला - गौतम, आओ, आओ। स्नान करके निकले हुए काश्यप को वनस्पतियों की सेवा बता दें।

दूसरा - ठीक है। (दोनों का प्रस्थान)

दोनों सखियाँ - ओह, हम लोगों ने कभी आभूषण का उपयोग नहीं किया है चित्रकारी के कार्य से परिचित होने से हम लोग तेरे अंगों में आभूषण पहनाती हैं।

शकुन्तला - मैं तुम्हारी निपुणता जानती हूँ।

(दोनों शकुन्तला को आभूषण पहनाने का नाट्य करती हैं।)

व्याख्या- प्रियंवदा के द्वारा कहे गए कथन कि सम्राट पति को प्राप्त करके व महादेवी का पद प्राप्त करके राजलक्ष्मी का अनुभव करोगी, पर शकुन्तला लज्जा करने लगती है, जो कि स्वाभाविक है।

तापस कन्याओं ने कभी आभूषण तो पहने नहीं थे, अतः वे नहीं जानती थीं कि आभूषण कैसे पहने जाते हैं परन्तु वे चित्र की सहायता से आभूषण पहनाती हैं।

शब्दार्थ - **अभ्युपत्त्या** = वृक्षों के अनुग्रह द्वारा, **अभिषेकोत्तीर्णाय** = स्नान करके आये हुए, **नैपुणम्** = निपुणता को, **वनस्पतिसेवाम्** = वनस्पतियों की सेवा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी - **अभ्युपपत्ति** = अभि उपपद्+क्तिन्, अभिषेक = अभि+सिच्+घञ्, **उत्तीर्ण** = उद्+तृ+क्त, **नैपुणम्** = निपुण+अण् ।

मूलपाठ –

(ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः)

काश्यपः –

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ॥6॥

(इति परिक्रामति)

अन्वयः - अद्य शकुन्तला यास्यति इति हृदयं उत्कण्ठया संस्पृष्टम्, कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषः दर्शनं चिन्ताजडम्। अरण्यौकसः मम तावत् स्नेहात् ईदृशम् इदं वैक्लव्यं, गृहिणः नवैः तनयाविश्लेषदुःखः कथं नु पीड्यन्ते।

अनुवाद - (तदनन्तर स्नान करके आए हुए काश्यप का प्रवेश)

काश्यप- आज शकुन्तला विदा होगी, इसलिए मेरा हृदय दुःख से भरा है। आँसुओं के बहने को रोकने से गला भर आया है।

दृष्टि चिन्ता के कारण निश्चेष्ट हो गई है। जंगल में रहने वाले मुझको प्रेम के कारण इस प्रकार का दुःख हो रहा है तो गृहस्थ लोग पहली बार पुत्री के वियोग से कितने अधिक दुःखित होते होंगे?॥6 11

(चारों ओर घूमते हैं।)

व्याख्या- कन्या को पति-गृह के लिए विदा करते समय पिता के हृदय में जो पीड़ा होती है, उसका कालिदास ने सुन्दर चित्रण किया है। शकुन्तला अभी पति के घर के लिए विदा नहीं हुई है, तभी वियोग की कल्पनामात्र से इतना कष्ट है, तो जब वस्तुतः विदा हो जायेगी उस समय का कष्ट तो और भी व्याकुलता को उत्पन्न करेगा।

शब्दार्थ - संस्पृष्टम् = व्याप्त है, उत्कण्ठया = दुःख से, कलुष= मैला, दर्शनम् = दर्शनशक्ति, अरण्य = वन, गृहिणः गृहस्थ, तनया = पुत्री।

व्याकरणात्मक टिप्पणी - संस्पृष्टम् = सम्+स्पृश्+क्त, स्तम्भितबाष्पवृतिः = स्तम्भिता बाष्पवृत्तिः (कर्मधारय समास), अरण्यौकसः = अरण्यम् ओकः गृहं यस्य (बहुव्रीहि समास)। प्रकृत श्लोक में अर्थापत्ति अलंकार तथा शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

मूलपाठ –

सख्यौ - हला शकुन्तले, अवसितमण्डनाऽसि । परिधत्स्व साम्प्रतं क्षौमयुगलम् । (हला सउन्दले, अवसिदमण्डणासि। परिधेहि संपदं खोमजुअलं ।) (शकुन्तलोत्थाय परिधत्ते)

गौतमी - जाते, एष ते आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थितः । आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व । (जादे, एसो दे आणन्दपरिवाहिणा चक्खुणा परिस्सजन्तो विअ गुरू उवट्ठिदो। आआरं दाव पडिवज्जस्स ।)

शकुन्तला - (सव्रीडम्) तात, वन्दे। (ताद, वन्दामि।)

अनुवाद - दोनों सखियाँ सखी शकुन्तला, तुम्हारा श्रृंगार पूरा हो गया है। अब रेशमी वस्त्रों को पहन लो। (शकुन्तला उठकर पहनती है)

गौतमी - पुत्री, आनन्द के आँसूओं को बहाने वाली आँखों से तुम्हारा मानो आलिंगन करते हुए ये तुम्हारे पिता उपस्थित हुए हैं। इनके प्रति शिष्टाचार का पालन करो।

शकुन्तला (लज्जा से) पिता, मैं प्रणाम करती हूँ।

शब्दार्थ - अवसितमण्डना = तुम्हारा श्रृंगार पूर्ण हो गया है, क्षौमम् रेशमी, परिधत्स्व = पहन लो, चक्षुष नेत्रों से, आचार = शिष्टाचार।

व्याकरणात्मक टिप्पणी - अवसितमण्डना अवसितं समाप्तं मण्डनं यस्याः सा बहुव्रीहि समास), अवसित = अव+सो+क्त, आनन्दपरिवाहिणा = आनन्द+परि+वाहि+णिनि+तृतीया

मूलपाठ –

काश्यपः - वत्से –

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि ।।7।।

गौतमी - भगवन्, वरः खल्वेषः । नाशीः। (भअवं, वरो क्खु एसो। ण आसिसो।)

काश्यपः - वत्से, इतः सद्योहुताग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व ।

(सर्वे परिक्रामन्ति

अन्वयः - शर्मिष्ठा ययातेः इव भर्तुः बहुमता भव। सा पूरुम इव त्वम् अपि सम्राजं सुतम् अवाप्नुहि।

अनुवाद –

काश्यप - पुत्री

जिस प्रकार शर्मिष्ठा ययाति को बहुत अधिक प्रिय और आदरणीय थी, उसी प्रकार तुम भी पति की बहुत अधिक प्रिय और आदरणीय बनो। जिस प्रकार उस शर्मिष्ठा ने पुरु नामक सम्राट् पुत्र को प्राप्त किया था, उसी प्रकार तुम भी सम्राट् पुत्र को प्राप्त करो। ।7।।

गौतमी - भगवन्, यह तो निश्चय से वर है, आशीर्वाद नहीं।

काश्यप - पुत्री, इस ओर से तत्काल आहुति दी गयी अग्नियों की परिक्रमा करो। (सब घूमते हैं।)

शब्दार्थ **भर्तुः** = पति की, **वत्से** पुत्री, **बहुमता** = अत्यधिक प्रिय, **सुतम्** = पुत्र.

अवाप्नुहि = प्राप्त करो, **प्रदक्षिणीकुरुष्व** = प्रदक्षिणा करो

विशेष - प्रस्तुत श्लोक में उपमा अलंकार है। यहाँ अनुष्टुप् छन्द है।

बोध प्रश्न

1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

i) कण्व ऋषि ....सोम.... तीर्थ गए थे।

ii) ययाति की पत्नी ...शर्मिष्ठा... थी।

iii) क्षमायाचना के लिए दुर्वासा के पास ...प्रियंवदा... जाती है।

iv) शाकुन्तलम् में शकुन्तला को ...दुर्वासा... ने शाप दिया।

iii) अरण्यौकसः पद का अर्थ है-

(क) वनवासी

(ख) गृहस्थ

(ग) ब्रह्मचारी

(घ) तपस्वी

1. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नायकः दुष्यन्तो वर्तते -

(a) धीरोदात्तः (b) धीरोद्धत्तः

(c) धीरललितः (d) धीरप्रशान्तः

UP PGT Sanskrit-2021

Rajasthan Assistant Professor 2020

(1) धीरोदात्त - महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः। स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः।।

(2) धीरोद्धत्त - दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः। धीरोद्धत्तस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः ।।

(3) धीरललित-निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः ।

(4) धीरप्रशान्त - सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः। स्त्रोत- दशरूपक ।

2. अभिज्ञान शाकुन्तलस्य नायिका अस्ति?

(a) प्रियम्वदा
(b) शकुन्तला
(c) अनसूया
(d) गौतमी

UGC NET December 2019

Ans. (b) : अभिज्ञान शाकुन्तलस्य नायिका शकुन्तला अस्ति।

अर्थात अभिज्ञान शाकुन्तलम् की नायिका शकुन्तला है। प्रियम्वदा और अनसूया ये दोनों शकुन्तला की सखी हैं।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् में 196 श्लोक हैं। इसका नायक दुष्यन्त है।

कण्व शकुन्तला के पालित पिता हैं।

3. 'आः अतिथिपरिभाविनि' अस्य कथनस्य कथनकारः -

(a) महर्षि विश्वामित्रः

(c) महर्षि कण्वः

(b) महर्षि मारीचः

(d) महर्षि दुर्वासा

UP TGT Sanskrit-2021

Ans. (d) : 'आः अतिथिपरिभाविनि' अस्य कथनस्य कथनकारः 'महर्षि दुर्वासा'। यह कथन अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क का है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की विश्व प्रसिद्ध नाट्य रचना है। इसमें कुल सात अङ्क तथा 196 श्लोक हैं।

4. 'इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि ।।'
इतीयं सूक्तिर्विद्यते

(a) मेघदूते
(b) अभिज्ञानशाकुन्तले
(c) उत्तररामचरिते
(d) नीतिशतके

UP-TGT-Sanskrit-2021

Ans. (b) : 'इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि ॥' इतीयं सूक्तिः अभिज्ञानशाकुन्तले विद्यते। अर्थात् - निश्चय ही स्त्रियों को अपने इष्टजन (प्रियतमों) के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं। यह सूक्ति अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से है।

5. अभिज्ञान शाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में आश्रम में कौन सा अतिथि प्रवेश करता है जिसकी उपेक्षा परिलक्षित होती है?

(a) दुष्यन्त (b) कण्व

(c) दुर्वासा (d) विश्वामित्र

UP TGT Exam 2016

Ans : (c) अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में आश्रम में दुर्वासा अतिथि प्रवेश करता है जिसकी उपेक्षा परिलक्षित होती है। अपनी उपेक्षा को देखकर ही दुर्वासा शकुन्लता को शाप देते हैं। 'विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा------- कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।।"

6. "सा तपस्विनी निर्वृता भवतु" इस पंक्ति में सा किसके लिए प्रयुक्त है?

(a) शकुन्तला के लिए
(b) गौतमी के लिए
(c) अनसूया के लिए
(d) प्रियंवदा के लिए

UP TGT Exam 2016

Ans : (a) "सा तपस्विनी निर्वृता भवतु" इस पंक्ति में सा पद शकुन्तला के लिए आया है।

7. अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क में किस अर्थोपक्षेपक का प्रयोग किया गया है?

(a) विष्कम्भक का
(b) प्रवेशक का
(c) अङ्क का
(d) अङ्कावतार का

UP TGT Exam 2016

Ans: (a) अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अङ्क में 'विष्कम्भक' अर्थोपक्षेपक का प्रयोग किया गया है जिसका परिगणन अर्थोपक्षेपक के अन्तर्गत किया जाता है।

विष्कम्भक -

वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः ।

8. "सखि आवां तावदुत्कण्ठां विनोदमिष्याव:" आयी हुई यह उक्ति किसने कही है?

(a) अनसूया ने (b) प्रियंवदा ने

(c) गौतमी ने (d) शकुन्तला ने

UP TGT Exam 2016

Ans : (b) "सखि आवां तावदुत्कण्ठां विनोदमिष्याव:" अर्थात् सखि हम दोनों (प्रियंवदा, अनसूया) तुम्हारी उत्कण्ठा से मन बहलायें। यह उक्ति प्रियंवदा की है।

9. "कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुम् प्रभवति" यह वाक्य अभिज्ञान शाकुन्तल में कहा है

(a) अनसूया (b) प्रियंवदा

(c) कण्वशिष्यः (d) दुर्वासा

UP TGT Exam 2009, 16, 21 RPSC Asst.Pro.2020

Ans : (b) "कोऽन्यो हुतवहात् दग्धुम् प्रभवति" अर्थात् अग्नि के अतिरिक्त अन्य कौन जला सकता है। यह वाक्य अभिज्ञान शाकुन्तलम् में अनसूया द्वारा कहा गया है। जबकि आयोग ने इसका उत्तर (b) अर्थात् प्रियंवदा का कथन माना है।

10. "तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोद्याभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु" यह पंक्ति है

(a) मेघदूत की
(b) रघुवंश की
(c) उत्तररामचरित की
(d) अभिज्ञानशाकुन्तल की

UP TGT Exam 2016

Ans : (d) 'तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोद्याभ्यां लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु' अर्थात् दो तेजों (सूर्य और चन्द्र) का एक साथ उदय और अस्त होना ही संसार की दशाओं (सुख दु:ख) को नियंत्रित करता है।

11. "स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथा प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव" यह पंक्ति किसने कही है?

(a) दुष्यन्त ने (b) कण्व ने

(c) शार्ङ्गरव ने (d) दुर्वासा ने

UP TGT Exam 2016

UPHESC Asst. Pro. Jan. 2015 UP DIET 2014

Ans : (d) 'स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव' यह पंक्ति दुर्वासा ने कहा है।

"विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थि तम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ।।

अर्थात् एकाग्रचित्तवाली जिसका चिन्तन करती हुई (यहाँ) उपस्थित मुझ तपस्वी को नहीं जान (देख) पा रही हो, वह (तेरे द्वारा) स्मरण दिलाये जाने पर भी तुमको (उसी प्रकार) स्मरण नहीं करेगा।

(जिस प्रकार) उन्मत्त (व्यक्ति) पहले की कही गयी बात को स्मरण नहीं करता है। यह श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क से उधृत है।